उत्तरमाला

खंड 'अ' (वस्तुपूरक प्रश्न)

उ.1	1. (द)	2. (अ)	3. (द)	4. (स)	5. (ब)
			अथवा		
	1. (द)	2. (ब)	3. (स)	4. (द)	5. (द)
उ.2	1. (द)	2. (स)	3. (स)	4. (अ)	5. (द)
			अथवा		
	1. (ब)	2. (द)	3. (द)	4. (स)	5. (अ)
उ.3	1. (स)	2. (द)	3. (ब)	4. (अ)	5. (ब)
उ.4	1. (ब)	2. (अ)	3. (स)	4. (अ)	5. (द)
उ.5	1. (स)	2. (अ)	3. (स)	4. (ब)	5. (ब)
उ.6	1. (द)	2. (स)	3. (द)	4. (ब)	5. (स)
उ.7	1. (ब)	2. (स)	3. (स)	4. (ब)	5. (ब)
उ.8	1. (द)	2. (स)			
उ.9	1. (ब)	2. (स)	3. (द)	4. (स)	5. (स)
उ.10	1. (स)	2. (द)			

खंड 'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

उ.11

(अ) हालदार साहब की कल्पना में सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति पर चश्मा लगाने वाला 'कैप्टन' नाम का आदमी खूब लंबा-लगड़ा फौजी जवान था। उन्हें लगा कि उसकी कोई दुकान होगी, जहाँ से चश्मे लाकर वह नेता जी का लगा देता है, परन्तु उन्होंने देखा कि कैप्टन नाम का चश्मेवाला बिल्कुल मरियल सा बूढ़ा और लँगड़ा व्यक्ति है। उसके सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा था। उसके एक हाथ में संदूकची और दूसरे हाथ में बाँस पर लटके चश्मे थे। वह घूम-घूमकर चश्में बेचा करता था: क्योंकि उसके पास कोई दुकान नहीं थी। अपनी कल्पना के विपरीत यह सब देखकर हालदार साहब अवाक रह गए।

(ब) भगत जी प्रचलित मान्यताओं को आँख बंद करके नहीं मानते थे। वे जानते थे कि इस समाज में पत्नी को पति की चिता में आग देने की अनुमति नहीं है, फिर भी उन्होंने अपनी पुत्रवधू से अपने बेटे की चिता में आग दिलवाई। यहाँ तक कि उसे पुनर्विवाह करने की आज्ञा देकर भाई के साथ भेज दिया। अपने इकलौते बेटे की मृत्यु पर शोक नहीं उत्सव मनाया। उनके अनुसार उसके बेटे की आत्मा का मिलन परमात्मा से हुआ है तो यह बात खुशी मनाने की है। वे उसके मृत शरीर के सामने बैठकर भक्ति पद गाते रहे। इन तीनों ही घटनाओं से सिद्ध होता है कि भगत समाज में प्रचलित मान्यताओं को नहीं मानते थे।

(स) 'लखनवी' अंदाज पाठ में लेखक ने नवाब साहब के माध्यम से नवाबी परंपरा की झूठी आन-बान दिखाने की प्रवृति पर व्यंग्य किया है, जो वास्तविकता से बेखबर एक बनावटी जीवन-शैली के आदी हैं। आज के समय में भी नवाब साहब के रूप में ऐसी परजीवी संस्कृति को देखा जा सकता है। नवाब साहब का खीरे को मात्र सूँघकर स्वाद प्राप्त होने और उसे बिना खाए खिड़की से फेंककर पेट भर जाने का दिखावा करना - उनकी बनावटी रईसी को दर्शाता है। उनका सेकेड क्लास में यात्रा करना इस बात को प्रमाणित करता है कि नवाब साहब की नवाबी ठसक तो नहीं रहीं, परंतु फिर भी वे अपने हाव-भाव और क्रियाकलापों से झूठी शान दिखाते हैं, जिसका कोई महत्व नहीं है। इस कहानी में उन ढोंगी लेखकों पर व्यग्य किया गया है, जो स्वयं को नई कहानी का लेखक कहते हैं और विचार, घटना और पात्र के बिना ही कहानी लिखने का दावा करते हैं।

CBSE-2021\Module\CBSE-Sample Papers_(10th)\Hindi\3. SAMPLE PAPER_1 Course (A)_Solution.p65"

(द) देवदार हिमालय पर 6,000 फुट से 8,000 फुट तक की ऊँचाई पर पाया जाने वाला एक बहुत बड़ा पेड़ होता है। इसकी लकड़ी सुन्दर, हल्की व सुगंधित होती है। यह अपनी मजबूती के लिए प्रसिद्ध है। इसमें धुन नहीं लगता है।

फादर में भी देवदार के समान सभी गुण थे। उनका व्यवहार सुगंध देने वाला अर्थात् अच्छा था। विचारों से फादर सुदृढ़ थे। फादर सन्यासी थे, जो पवित्रता का प्रतीक है। इन सब कारणो से फादर की उपस्थिति लेखक को दावेदार की छाया जैसी लगती थी।

उ.12

(अ) यहाँ वचन की मर्यादा न रहने की बात की जात रही है। हमारे समाज में वचन की बहुत मर्यादा रही है। इसके लिए लोगों ने प्राण भी दे दिए है। कृष्ण ने गोपियों को वापस आने का वचन दिया था, जिसके सहारे वे धैर्य धारण किए हुए थी। कृष्ण ने वापस न आकर वचन की मर्यादा को तोड़ दिया है। इसी कारण अब गोपियों का धैर्य भी टूट रहा है।

(ब) लक्ष्मण ने शूरवीर या वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई –

(क) शूरवीर या वीर योद्धा देवता, ब्राह्मण, भगवान् के भक्त और गाय पर वीरता नहीं दिखाते है।

(ख) वीर योद्धा रणभूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन करते है, वे अपनी वीरता का बखान नहीं करते है।

(ग) धीरता और संतोष वीरों का अनन्य गुण होता है, उन्हें अकारण ही क्रोध नहीं आता और यदि आता भी है तो वे क्रोध में भी विवेक नहीं खोते है।

(घ) गाली देना कायरों और दुर्बलों का अस्त्र है, वीर योद्धा दूसरों को गाली देकर अपमान नहीं करते, भले ही वह शत्रु ही क्यों न हों।

(स) 'उत्साह' कविता में कवि ने बादल का निम्नलिखित अर्थो में प्रयोग किया है –

(क) अपने गर्जन-तर्जन अर्थात् आह्वान से हताश निराश, शोषित और परतंत्र भारतीयों में उत्साह और क्रांति की भावना भरने वाले क्रांतिकारी के अर्थ में।

(ख) अपने अंदर निहित वज्र (शब्द शक्ति) से जीर्णता का विध्वंस कर नूतन कविता के सृजन से नवजीवन देने वाले कवि के अर्थ में।

(ग) अपनी शीतल जलधारा से तप्त धरा को शीतलता प्रदान करने वाले परोपकारी के अर्थ में।

उ.13

(अ) माँ भोलानाथ को जबरदस्ती पकड़कर पहले नहलाती, फिर उसके सिर में बहुत सारा कड़वा तेल डालकर चोटी गूँथतीं और उसमें फूलदार लट्टू बाँधती थीं। उसे कन्हैया की तरह ही रंगीन कुर्त्ता टोपी पहनाकर काजल की बिंदी लगा देती थी। इस प्रकार वे उसे कन्हैया बना देती थी। भोलानाथ अपने पिता के साथ भोजन करके तृप्त हो जाता था, लेकिन माँ को संतुष्टि नहीं होती थी। वे फिर से उसे खिलाने की जिद करती। दही-भात सानकर चिड़ियाँ, कबूतर, मैना, तोता, हंस आदि के नाम से उसके ग्रास बनातीं और भोलानाथ से कहती कि जल्दी से खा लो, वरना ये सब उड़ जाएँगे। लेखक उनके बहकावे में आ जाता और पेट भरा होने पर भी बहुत सा खाना खा जाता था। इस युक्ति से माँ उसे खाना खिलाती थीं।

(ब) इस कथन में 'नाक' मान सम्मान की प्रतीक है। इसके माध्यम से लेखक बताना चाहता है कि सरकारी तंत्र ने रानी एलिबेथ के स्वागत का पूरा प्रबंध कर लिया था। सत्कार की सारी सामग्री दिल्ली में उपलब्ध थी, लेकिन न तो प्रबंध करने वाले सरकारी तंत्र की नाक थी और न ही ब्रिटिश शासकों की। सरकारी तंत्र की नाक (आत्मसम्मान) इसलिए नहीं थी क्योंकि वह उन अंग्रेज शासको का स्वागत सत्कार कर रहा था।, जिन्होने उन्हें सैकड़ों वर्षो तक गुलाम रखा और उन पर तरह-तरह के अत्याचार किए। ब्रिटिश शासकों की नाक (मान) वहाँ इसलिए नहीं थी, क्योंकि जॉर्ज की मूर्ति की नाक काटकर दिल्ली की जनता ने संकेत दे दिया था कि अब अंग्रेजों का यहाँ कोई मान-सम्मान नहीं रहा है।

(स) प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरुप को देखकर लेखिका को जो अनुभूति होती है, उसे लेखिका ने निम्नलिखित शब्दों में प्रकट किया है "आदिम युग की किसी अभिशप्त राजकुमारी-सी मैं भी नीचे बिखरे भारी-भरकम पत्थरों पर बैठ झरने के संगीत सुनने लगी। थोड़ी देर बाद ही बहती जलधारा में पाँव डुबोया तो भीतर तक भीग गई। मन काव्यमय हो उठा। वह सत्य और सौंदर्य को छूने लगा।"

जीवत की अनंतता का प्रतीक वह झरना ... उन अद्‌भुत-अनूठे क्षणों में मुझमें जीवन की शक्ति का अहसास हो रहा था। इस कदर प्रतीत हुआ की जैसे मैं स्वयं भी देश और काल की सरहदों से दूर बहती धारा बन बहने लगी हूँ। भीतर की सारी तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ इस निर्मल धारा में बह गई। मन हुआ कि अनंत समय तक ऐसे ही बहती रहूँ ... सुनती रहूँ इस झरने की पुकार को।

CBSE-2021\Module\CBSE-Sample Papers_(10th)\Hindi\3. SAMPLE PAPER_1 Course (A)_Solution.p65"

उ.14

(अ) इंटरनेट का महत्व

संकेत-बिंदु – * इंटरनेट क्या है? * इंटरनेट की स्थापना * प्रयोग * महत्व।

इंटरनेट दुनियाभर में अलग-अलग जगहों पर लगे कंप्यूटरों को जोड़कर सूचना की आवाजाही के लिए बनाई गई एक विशेष प्रणाली है। इसकी स्थापना अमेरिका में एक विशेष परियोजना के तहत हुई थी। उस समय संचार की इस सेवा का उद्देश्य था-परमाणु हमले की स्थिति में संचार का नेटवर्क बनाए रखना। लेकिन जल्दी ही यह सुविधा रक्षा शोध केंद्रों से निकलकर व्यावसायिक क्षेंत्रों पहुँच गई । आज इंटरनेट पर कई सेवाएँ उपलब्ध है; जैसे -ई-मेल (इलेक्ट्रॉनिक मेल); जिसके माध्यम से काई भी सूचना, संदेश, पत्र, पता दुनिया के किसी भी कोने में तत्काल पहुँचाया जा सकता है। डब्ल्यू-डब्ल्यू-डब्ल्यू (वर्ल्ड वाइड वेब) डाटा बसे के द्वारा कोई भी उपभोक्ता इच्छित सूचना प्रापत कर सकता है। शुरू-शुरू में इंटरनेट पर केवल लिखित सामग्री ही प्राप्त होती थी, लेकिन इब इस पर चित्र, ध्वनि, कार्टून आदि सभी प्रकार की सामग्री उपलब्ध हो जाती है। इसके अलावा इंटरनेट की अन्य सुविधाओं में 'होमपेज' है। इसमें कोई भी व्यक्ति, कंपनी या संस्था अपने बारे में विवरण देकर एक तरह से विज्ञापन कर सकती हैं। 'होमपेज' से जानकारी लेने को 'हिट' कहा जाता है। 'नेट' में सूचना भंडार, विश्वकोश, पुरानी-नई लोकप्रिय पुस्तकें, विशेष लेख, शोध पत्र, अखबारों की कतरनें, पूरे अखबार एवं पत्रिकाएँ कोर्ट के फैसले आदि के विशाल सूचना भंडार में से कोई भी उपभोक्ता मनचाही सूचना ले सकता है। इसके अतिरिक्त खेल बुलेटिन तथा फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल (एफ.टी.पी.) है, जिसके जरिए हम दूर बैठे किसी व्यक्ति से जानकारी अपनी फाइल में ले सकते है और अपनी जानकारी उसे दे सकते हैं। यहाँ तक कि ऐतिहासिक महत्व के दस्तावेज़, गीत, कविताएँ, टी.वी. कार्यक्रमों के सार संक्षेप आदि भी हम अपनी फाइल में ले सकते हैं।

(ब) बालश्रम

संकेत-बिंदु – * समाज के लिए अभिशाप * बच्चों का शोषण * कारण * सरकारी प्रयास * हमारी जिम्मेदारी।

बचपन मनुष्य के जीवन का सबसे सुंदर और प्यारा समय है, जब न किसी बात की चिंता होती है, न कोई ज़िम्मेदारी। बस, खेलना-कूदना, पढ़ना-हँसना और आनंद उठाना, पंरतु सभी का बचपन ऐसा ही हो, यह ज़रुरी नहीं । आज समाज की तस्वीर बिलकुल उल्टी है। छोटे बड़े सभी शहरों या कहिए हर गली, हर मोड़ पर आपको बच्चे मजदूरी करते मिल जाएँगे। इन बच्चों का समय स्कूल में कॉपी किताबों और दोस्तो के बीच नहीं, बल्कि होटलों, घरों, उद्योगों बरतनों, झाड़ू और औजारों के बीच बीतता है। अधिकांश बच्चे घरेलू नौकरों के रुप में कार्य करते है, जहाँ इन्हे दो समय का भरपेट भोजन भी नहीं मिलता है। नाममात्र का वेतन देकर दिन रात काम कराया जाता है, यहाँ तक कि मारा पीटा भी जाता है। बड़ी संख्या में बच्चे कारखानों में काम करते है, जहाँ उन्हे श्रमसाध्य कार्य करने व अस्वास्थयकर वातावरण में काम करने को विवश किया जाता है। आपने प्राय: छोटे बच्चों को कूड़े के ढेरों से प्लास्टिक की बोतलें, काँच, लोहा इकट्ठा करते देखा होगा। छोटी सी उम्र में इन बच्चों को गलीचे बुनने, चूडियों के कारखाने पटाखे बनाने के कारखाने जैसी खतरनाक स्थितियों में काम करना पड़ता है। भारत में इस भयावह स्थिति का एकमात्र कारण है गरीबी और अशिक्षा । अशिक्षित परिवारों में बच्चों की अधिक संख्या उन्हे रोटी जुटाने के लिए काम करने पर मजबूर कर देती है। पिछले कुछ दशकों से बालक्षम के विरूद्ध आवाज उठाई जा रही है। बालश्रम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक गंभीर मुद्दे के रूप में देखा गया है। क्योकि बालश्रम बच्चे के भविष्य के केवल हानि ही नहीं पहुँचाता, उसे नष्ट कर देता है। यह मानव अधिकारों का उल्लंघन है। हमारे देश के बालक्षम पर रोक लगाने के लिए स्वतंत्रता के पश्चात् अनेक कानून बनाए गए सविंधान के नीति निदेशक तत्वो में राज्यो को निर्देश दिया गया है कि वे उसे कानून बनाएँ, जिनसे 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को ऐसे कार्य स्थल या कारखाने में न रखा जाए, जो खतरनाक हों। बालमजदूरों की स्थिति में सुधार के लिए सरकार ने सन् 1986 ई0 में चाइल्ड लेबर एक्ट बनाया, जिसके तहत बालमजदूरी को अपराध माना गया। इन सभी प्रयोगों के बावजूद बालक्षम भारत एक चुनौती है। इसकी समाप्ति के लिए आवश्यकता है समाज को जागरुक और बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाने की।

CBSE-2021\Module\CBSE-Sample Papers_(10th)\Hindi\3. SAMPLE PAPER_1 Course (A)_Solution.p65"

(स) ऊर्जा संरक्षण

संकेत बिंदु : ऊर्जा संरक्षण की आवश्यकता आत्मनिर्भरता का उपाय हमारी भूमिका संरक्षण का उपाय।

किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए यह परमावश्यक है। उसके यहाँ ऊर्जा का अधिकाधिक उत्पादन किया जाए : क्योकि ऊर्जा ही देश के विकास को गति प्रदान करती है। ऊर्जा उत्पादन से भी अधिक आवश्यक है उपलब्ध ऊर्जा का समुचित सरंक्षण । उद्योगों का चलाने के लिए ऊर्जा दो प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त होती है। नवीकरणीय तथा परंपरागत। दोनों ही संसाधनो से ऊर्जा प्राप्त करने की प्रक्रिया अत्यंत लंबी तथा खर्चीली होती है। इसलिए ऊर्जा का हमे आवश्यकतानुसार ही प्रयोग करना चाहिए। आज जो देश आर्थिक विकास के शिखर पर है, उनका सर्वप्रमुख कारण ऊर्जा के क्षेत्र में उनकी आत्मनिर्भरता है। ऊर्जा की बचत करके ही हम लंबे समय तक अधिकाधिक कल कारखाने चला सकते है, जिससे उत्पादन में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकेगी। औद्योगिक उत्पादन की मात्रा पर ही किसी देश की प्रगति करती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ऊर्जा की बचत का दायित्व हम सभी का है यदि हम छोटी छोटी सावधानियाँ बरते तो ऊर्जा की बचत के लिए अपनाए जाने वाले कुछ उपाय इस कार है। बिजली का आवश्यकतानुसार प्रयोग, ऐसी तकनीक वाले उपकरणो का प्रयोग, जो कम ऊर्जा खपत करते हों, निजी वाहनों के स्थान पर सार्वजनिक वाहनों का अधिक से अधिक प्रयोग आदि वस्तुत: ऊर्जा की बचत एवं संरक्षण में ही हमारा भविष्य उज्जवल, सुरक्षित एवं संरक्षित है।

उ.15 पटाखों से होने वाले प्रदुषण के प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए मित्र को पत्र –

सी–51, प्रताप विहार

रूड़की।

दिनांक : 12 अक्टूबर 20××

प्रिय मित्र सुबोध,

नमस्कार।

मैं परिवार सहित कुशलतापूर्वक हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी अपने परिवार सहित कुशलतापूर्वक होंगे। दीपावली आने वाली है आशा है आप पटाखे खरीदने की तैयारी कर रहें होगें। मैं जानता हूँ कि आपको पटाखे चलाने का बहुत शौक है। मित्र ! मैं आपको बताना चाहता हूँ कि पटाखे पर्यावरण प्रदूषण को सबसे अधिक बढ़ाते है। इनसे ध्वनि प्रदूषण और वायु प्रदूषण दोनों ही बढ़ते है। हृदय रोगियो की इनकी तेज ध्वनि से बहुत खतरा होता है। इनका धुआँ दमा रोगियों के लिए मौत बन जाता है। ये आँखों के लिए भी बहुत हानिकारक है। इन सब बातों का देखते हुए हमारे परिवार ने इस दीपावली पर पटाखे न जलाने का संकल्प किया है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप भी पर्यावरण रक्षण के लिए पटाखें नहीं जलाएँगें और दूसरो को भी इस बात के लिए प्रेरित करेंगे। मेरी और से आपके माता पिता को चरणस्पर्श और नीलू को प्यार।

आपका मित्र

अ ब स

अथवा

विद्यालय के छात्रों की अनुशासनहीनता की घटनाओं का उल्लेख करते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य का पत्र –

256, सेक्टर–12

अंबाला (हरियाणा)

दिनांक : 5 अप्रेल 20××

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

भारतीय पब्लिक स्कूल,

सेक्टर–12

अंबाला (हरियाणा)।

CBSE-2021\Module\CBSE-Sample Papers_(10th)\Hindi\3. SAMPLE PAPER_1 Course (A)_Solution.p65"

विषय : छात्रों की अनुशासनहीनता रोकने हेतु अनुरोध पत्र।

महोदय,

मैं सेक्टर-12 का एक जिम्मेदार नागरिक हूँ और आपका ध्यान आपके विद्यालय के छात्रों की अनुशासनहीनता व अभद्र व्यवहार की और दिलाना चाहता हूँ। आपके विद्यालय के कुछ छात्र प्रतिदिन छुट्टी के पश्चात् बए स्टैण्ड पर एक समूह में एकत्र होते हैं और हुडदंग मचाते हैं। वे जोर जोर से चीखते हैं और आने जाने वालों को मजाक उड़ाते है। बस स्टैण्ड पर छात्राओं का आना जाना तो उन्होंने दूभर कर दिया है। वे उन्हें छेड़ते है, अभद्र व्यवहार करते है तथा फब्तियाँ कसते है। कई बार जिम्मेदार लोगों ने उन्हें रोकने और समझाने का प्रयत्न किया तो वे उन्हें भी अपशब्द बोलने लगे। वे बसों के पीछे लटक जाते है, फिर अचानक कूदकर सड़क पर आ जाते है। महोदय, एक प्रतिष्ठित स्कूल के विद्यार्थियों को ऐसा व्यवहार शोभा नहीं देता। इससे केवल उनकी ही नहीं, स्कूल की छवि भी खराब होती है, इन छात्रों की पहचान कराकर उनके विरूद्ध कड़ी अनुशासनात्मक कार्यवाही करने की आवश्यकता है। आपसे अनुरोध है कि आप इस संबंध में तत्काल कोई कार्यवाही करें।

धन्यवाद सहित

प्रार्थी

विवेक बंसल

उ.16 विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर विद्यार्थियो दुबारा निर्मित हस्तकला की वस्तुओं की प्रदर्शनी के प्रचार हेतु विज्ञापन

अथवा

'कॉल-मी' मोबाइल फोन का विज्ञापन

CBSE-2021\Module\CBSE-Sample Papers_(10th)\Hindi\3. SAMPLE PAPER_1 Course (A)_Solution.p65"

17. **रक्षाबंधन पर शुभकामना संदेश-लेखन-**

प्रेषक : क0ख0ग0

दिनांक : 7 अगस्त, 20××

बहना का सम्मान है राखी,
भाई का अरमान है राखी।
प्राणों से भी बढ़कर है जो,
ऐसा स्वाभिमान है राखी।

रक्षाबंधन की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

अथवा

बैसाखी पर शुभकामना संदेश-लेखन-

प्रेषक : क0ख0ग0

दिनांक : 14 अप्रैल, 20××

दिनांक : 7 अगस्त, 20××

वाहे गुरु से खालसा की सौगात पाई,
'सिंह' बन गए सारे सिख भाई।
धरती माता फसलों की दौलत भर लाई,
भँगाड़ा पाओ खुशी मनाओं, बैसाखी आई।

बैसाखी की लख-लख बधाइयाँ।

CBSE-2021\Module\CBSE-Sample Papers_(10th)\Hindi\3. SAMPLE PAPER_1 Course (A)_Solution.p65"